CulturalSamvaad.com

Nine Forms or Avatars of Durga

नवदुर्गा

About 'Nine Forms or Avatars of Durga'

The 'Nava Durga' are nine manifestations (also referred to as forms or avatars) of the Great Goddess Durga. They are worshipped especially during Navaratri, the beautiful Indian festival that is dedicated to Shakti or the Goddess. Each manifestation has an associated story and each avatar is worshipped for specific boons. However, it is critical for the devotee to understand and meditate on the spiritual message of each of these diverse forms of the primordial Goddess or Adiskhakti so that she or he can transcend this world. These avatars are also important because of their inclusive nature in the modern sense of the term.

About Cultural Samvaad

Cultural Samvaad is a platform to understand, appreciate and discuss the multi-hued fabric of India's rich and plural culture, her vast heritage, her infinite wisdom and her indomitable spirit. It is owned and managed by Hiranya Growth Partners LLP, a boutique consulting and strategic content firm.

Producer: Hiranya Growth Partners LLP
Editor: Garima Chaudhry

editor@ CulturalSamvaad.com
+91 79864 15731

Follow Us

देवी शैलपुत्री | Devi Shailaputri

CulturalSamvaad.com

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

देवी शैलपुत्री का अवतरण पर्वतराज हिमालय की पुत्री के रूप में हुआ था। वे वृषभ या बैल पर विराजमान हैं, उनके यशस्वी मुखमण्डल पर अर्ध-चंद्रमा सुशोभित है एवं उन्होंने हाथों में त्रिशूल और कमल धारण कर रखे हैं। माँ दुर्गा के इस मनोरम स्वरूप की आराधना नवरात्रि के प्रथम दिवस पर कर, साधक न केवल मनोवांछित लाभ की कामना करते हैं वरन् अपनी आध्यात्मिक यात्रा में कठिन से कठिन चोटी को चूमने हेतु माता शैलपुत्री का आवाहन भी करते हैं।

Devi Shailaputri appeared as the daughter of the King of Mountains – the majestic Himalayas and hence came to be known as such. She rides a bull and holds a trident in one hand and a lotus in the other. A crescent moon adorns the forehead of this illustrious form of Durga who is worshipped on the first day of Navratri not only for fulfillment of all wishes but also for commencing one's journey to the zenith in all spiritual and worldly endeavours.

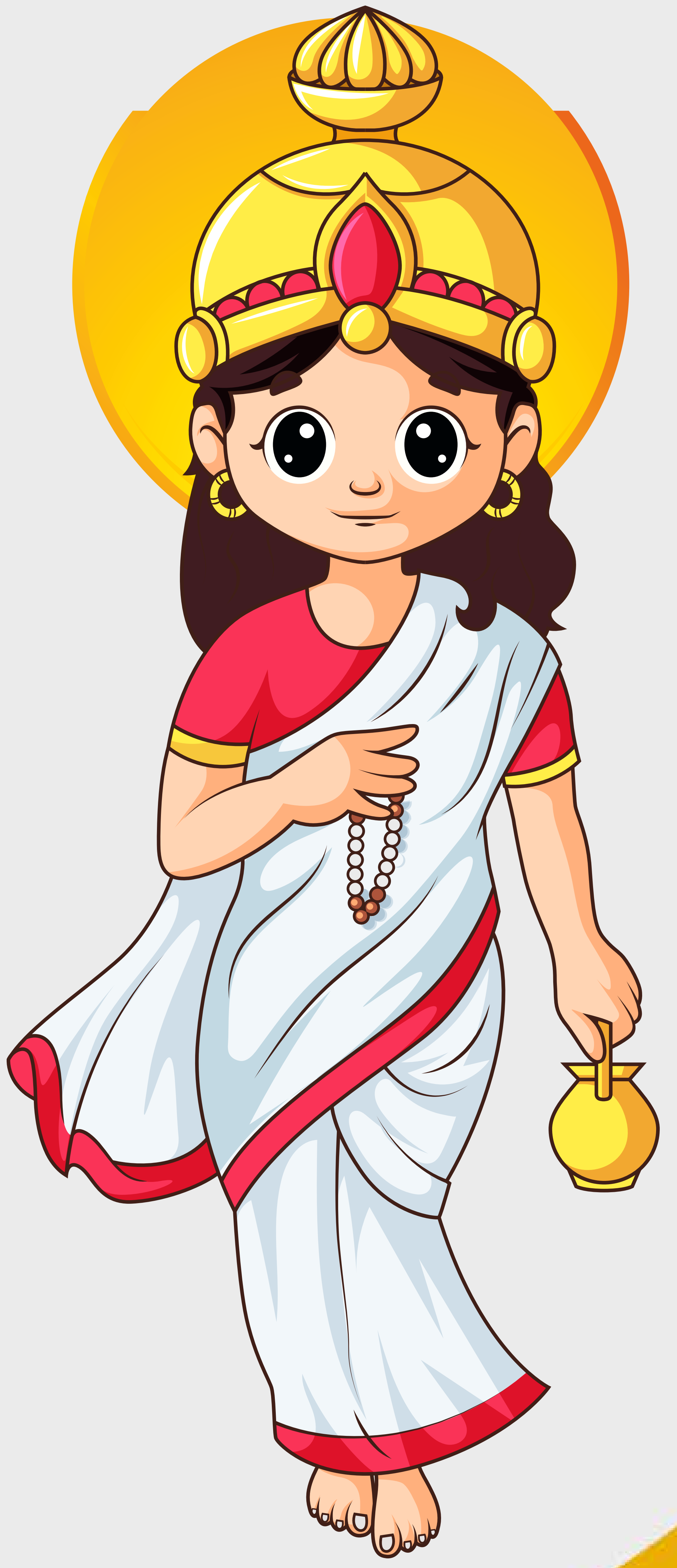

देवी ब्रह्मचारिणी | Devi Brahmacharini

CulturalSamvaad.com

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा॥

ब्रह्मचारिणी का अर्थ है - तप का आचरण करने वाली। देवी ब्रह्मचारिणी ने भगवान शिव को प्राप्त करने हेतु अपना सर्वस्व त्याग कर, सहस्त्रों वर्षों तक कठिन तपस्या की थी| श्वेत वस्त्र धारण कर, हाथों में कमण्डलु एवं जप की माला ले कर, आदिशक्ति माँ दुर्गा, इस ज्योतिर्मय स्वरूप में वैराग्य एवं सदाचार को प्रतिबिम्बित करती हैं। नवरात्रि के द्वितीय दिवस पर ब्रह्मचारिणी की आराधना कर, भक्त कामना करते हैं कि वह सच्चिदानन्द ब्रह्म तक पहुंचने की अपनी यात्रा में कभी भ्रमित न हों एवं त्याग और संयम से जीवन व्यतीत करें।

Her severe penance for thousands of years to attain Lord Shiva earned her the name – Brahmacharini, 'she who practises austerities'. This self-luminous form of Durga is adorned in white clothes and carries a rosary in one hand and a kamandalu (small vessel for carrying water) in the other. Devotees seek the blessings of Devi Brahmacharini, on the second day of Navratri and pray that they should not stray from the path of sacrifice and restraint as they continue in their quest for 'Brahman' – the ultimate truth and reality.

देवी चन्द्रघण्टा | Devi Chandraghanta

CulturalSamvaad.com

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ॥

देवी चन्द्रघण्टा के मुखमण्डल पर घण्टे के आकार में अर्ध-चंद्रमा विराजमान है। उनके दस हाथ हैं एवं उनकी सवारी सिंह है। अनेकानेक आयुधों से सुसज्जित, स्वर्णिम किरणों की तरह आभा बिखेरती, माँ दुर्गा का यह स्वरूप सदैव युद्ध के लिए तत्पर है। नवरात्रि के तीसरे दिन, देवी चन्द्रघण्टा की उपासना कर, भक्त न केवल अपने शत्रुओं से मुक्ति पाने की कामना करते हैं वरन् निर्भय, शान्त एवं समभाव आचरण के धनी होने के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

She is called Chandraghanta by virtue of the bell-shaped, half moon that adorns her forehead (chandra means moon and ghanta means bell). This form of Durga is resplendent with golden hues, rides a lion and has ten arms in which she holds multiple weapons. Devi Chandraghanta, the quintessential warrior is always ready for war and protects her devotees. She is worshipped on the third day of Navratri not only for freedom from all enemies and all fears but also for a calm and equanimous mind and character.

देवी कूष्माण्डा | Devi Kushmanda

CulturalSamvaad.com

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च ।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ॥

अष्टभुजा देवी कूष्माण्डा आदिशक्ति का स्वरूप हैं। उन्होंने ही अपनी मंद मुस्कराहट से इस अण्डाकार सृष्टि की रचना कर, सम्पूर्ण विश्व को अंधकार से मुक्त किया था। माँ दुर्गा की इस प्रतिमूर्ति के एक हाथ में अमृत का कलश है तो दूसरे हाथ में रक्त से भरा हुआ एक घड़ा है। नवरात्रि के चौथे दिन, भक्त देवी कूष्माण्डा की उपासना कर, न केवल शोक और रोग से मुक्ति प्राप्त करने की कामना करते हैं बल्कि सृष्टि में निहित परब्रह्म तक पहुँचने के दुर्लभ ज्ञान को जाग्रत करने के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

She is worshipped as the adishakti (primeval source of energy) who created this universe (egg-shaped cosmos) with her endearing and silent smile. She is the life force who infused energy and light into all that is manifest – before her there was only darkness. This eight-handed form of Maa Durga holds a pot of nectar in one hand and a pot of blood in another. Devotees pray to Devi Kushmanda on the fourth day of Navratri not only for deliverance from sorrow and illness but also for awakening of the intellect to appreciate the inherent divinity in all creation.

देवी स्कन्दमाता | Devi Skandamata

CulturalSamvaad.com

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया ।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥

जगतजननी देवी का यह स्वरूप, देवताओं के सेनानायक भगवान स्कन्द (कुमार कार्तिकेय) की माता के रूप में पूज़ा जाता है। देवी स्कन्दमाता के दो हाथों में कमल के पुष्प हैं, एक हाथ वर मुद्रा में है एवं चौथे हाथ से वह वात्सल्य से अपने पुत्र को थामे हैं। नवरात्रि के पाँचवें दिन, माँ दुर्गा की इस विभूति की एकाग्रचित्त हो, अर्चना कर, भक्त शान्ति एवं सुख की कामना के साथ अपने ज्ञान एवं अपनी क्रिया शक्ति में वृद्धि के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

She is the mother of the commander of the army of the Devatas – Lord Skanda or Kumar Kartikeya and hence becomes Devi Skandamata. This four-armed form of Maa Durga is visualised as holding her little son with one hand, blessing her devotees with another and holding lotus flowers in the other two hands. She is worshipped on the fifth day of Navratri not only for peace and happiness but also for endowing us with knowledge to make a difference and the will and power to act in tandem with that knowledge.

देवी कात्यायनी | Devi Katyayani

CulturalSamvaad.com

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद्देवि दानवघातिनी॥

महिषासुर का अन्त करने हेतु जब देवी ने पृथ्वी पर अवतरण लिया, तब उनके प्रथम पूजन का सौभाग्य महर्षि कात्यायन को मिला और माँ दुर्गा का यह स्वरूप कात्यायनी के नाम से विख्यात हो गया। सिंह पर आरूढ़, चार भुजाओं वाली, उज्ज्वल माँ कात्यायनी के एक हाथ में चन्द्रहास तलवार है, एक हाथ में कमल सुशोभित है, एक हाथ वर मुद्रा में है एवं एक हाथ अभय मुद्रा में है। नवरात्रि के छठवें दिन, देवी माँ से उनके भक्त अपने मनोवांछित पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

The formless Devi appeared in this world to annihilate Mahishasura. Her dazzling form was worshipped first by Maharishi Katyayana and she came to be known as Katyayani. She is self-effulgent, rides on a lion and has four hands. She carries her sparkling sword in one hand, holds a lotus in another, has one hand in the abhaya mudra (a gesture for endowing fearlessness) and the other hand in the vara mudra (a gesture for blessing devotees). This form of Maa Durga is worshipped on the sixth day of Navratri to attain one's desired purushartha or goal (Dharma, Artha, Kama, Mokhsha).

देवी कालरात्रि | Devi Kalaratri

CulturalSamvaad.com

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा ।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ॥

माँ कालरात्रि का रंग रात के घने अन्धकार के समान काला है एवं उनके तीन गोल-गोल नयन हैं। गदर्भ पर सवार, चतुर्भुज माँ दुर्गा की यह भयंकर विभूति शुभङ्करी भी कहलाती हैं क्योंकि वे सदैव ही अपने भक्तों को शुभ फल प्रदान करती हैं। विद्युत की चमकीली किरणों की तरह दैदीप्यमान, माँ कालरात्रि की उपासना नवरात्रि के सातवें दिन, दुष्टों एवं भय से मुक्ति प्राप्त करने के लिए की जाती है।

She is darker than the darkest night and is referred to as Kalaratri (ratri means night). This three-eyed, ferocious manifestation of Maa Durga has four hands and rides a donkey. She is worshipped on the seventh day of Navratri for freedom from all evil influences and all fears. Devi Kalaratri shines brightly like the lightning that pierces a dark night and is also called Shubhankari as she endows devotees with good fortune and all that is auspicious.

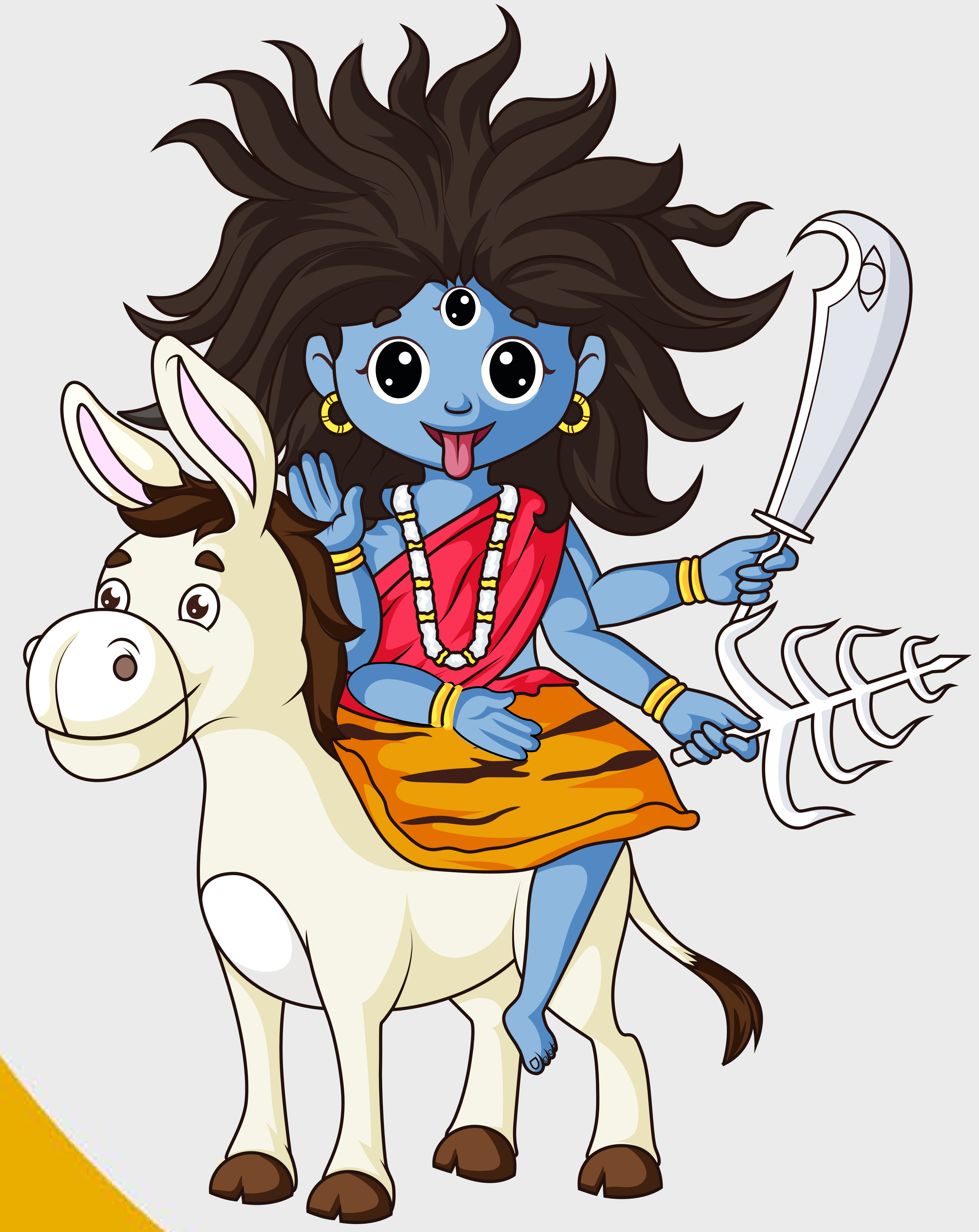

देवी महागौरी | Devi Mahagauri

CulturalSamvaad.com

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा ॥

गौर वर्ण की, गौर वस्त्र धारण कर, विद्युत की तरह श्वेत कान्ति से दैदीप्यमान, पवित्रता की प्रतिमूर्ति, देवी महागौरी वृषभ पर आरूढ़ हैं। माँ दुर्गा की यह अनुपम विभूति जिनके एक हाथ में त्रिशूल है एवं दूसरे हाथ में डमरू है, वास्तव में पार्वतीजी की है। उन्होंने भगवान शिव को पति के रूप में पाने हेतु सहस्त्रों वर्षों तक तप किया था। नवरात्रि के आठवें दिन, भक्तगण माता महागौरी की एकनिष्ठ भाव से उपासना कर न केवल लौकिक शांति एवं सुख की कामना करते हैं वरन् उनसे वर माँगते हैं की वे भी उनके समान अपने लक्ष्य को पाने के लिए एकाग्रचित्त हो कर, कठोर से कठोर तपस्या के कठिन पथ से कभी भी पथभ्रष्ट न हों।

She is white in colour, dons white garments, is resplendent like dazzling white light that emanates from the forces of nature and is the epitome of purity. Devi Mahagauri rides a bull, has four arms and holds a trident and a damaru (small musical instrument). She is a manifestation of Devi Parvati who undertook the strictest of penance for thousands of years to marry Lord Shiva. Devotees worship this unparalleled form of the great goddess on the eighth day of Navratri not only to obtain peace and happiness in this world but also to develop the willpower to pursue their goals with single-minded devotion without straying from the treacherous paths that may await them.

देवी सिद्धिदात्री | Devi Siddhidatri

CulturalSamvaad.com

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

कमल पर विराजमान, चार हाथों वाली, अष्ट-सिद्धियाँ देने वाली, माँ सिद्धिदात्री की उपासना समस्त देव, दानव, मनुष्य, यक्ष, गन्धर्व, आदि करते हैं। आदिशक्ति की परम अनुकंपा से भगवान शिव ने जब समस्त सिद्धियाँ प्राप्त कर लीं, तब देवी सिद्धिदात्री उनके बायें भाग से उत्पन्न हुयीं।देवादिदेव शिव अर्धनारीश्वर के नाम से प्रसिद्ध हो गए। माँ दुर्गा की इस विभूति को नवरात्रि के नवें और अन्तिम दिन, माया रूपी संसार को पार कर सच्चिदानन्द परब्रह्म को प्राप्त करने हेतु सर्वस्व पूजा जाता है।

She is seated on a lotus, has four hands and is worshipped by all living beings. She is Siddhidatri because she bestows the eight siddhis or spiritual powers on all devotees. Maa Adishakti (the primeval deity) endowed Lord Shiva with all siddhis. Devi Siddhidatri emerged from the left side of his body and he assumed the famous form of Ardhanarishwara (half woman and half man). This manifestation of Maa Durga is worshipped on the ninth and last day of Navratri to obtain the power to transcend this material world and to achieve the Parabrahman or supreme bliss.

HiranyaGrowthPartners.com

CulturalSamvaad.com

Follow Us:

First Edition. September 2024.

© Cultural Samvaad. All rights reserved.